Sanskrita Ki Raksha Evam Prachara Ke Liye Pratijna

संस्कृत की रक्षा एवं प्रचार के लिये प्रतिज्ञा

Document Information

Text title : Sanskrita Ki Raksha Evam Prachara Ke Liye Pratijna

File name : sanskRRitakIrakShAevaMprachArakeliyepratijnA.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org

संस्कृत की रक्षा एवं प्रचार के लिये प्रतिज्ञा

संस्कृत की सेवा में सबको तन मन आज लगाना है,
आज प्रतिज्ञा लेकर इसकी रक्षा में जुट जाना है । ०
यही हमारे पूज्य पूर्वजों की परमप्रिय वाणी है,
यही हमारी भुक्ति-मुक्ति की प्रिय जननी कल्याणी है,
सदियों से इसमें ही संचित सब साहित्य हमारा है,
वही इसीमें भारतीय प्रतिभा की निर्मल धारा है,
इसका विन्दु-बिन्दु अति पावन, मस्तक उसे चढ़ाना है,
इसकी रक्षा और वृद्धि का आज विधान बनाना है । १
कभी दूर देशों मैं भी था इसने पाया मान महान,
धर्म, राज्य, साहित्य, कला में अभिलेखों में भी सम्मान,
श्याम, अनाम, सुमात्रा, कम्बुज, मलय आदि सब देशों में,
जावा, बालि, बोनियो, सिंहल, वर्मा, चीन प्रदेशों में,
आज पुनः उन देशों में भी हमें इसे पहुँचाना है,
संस्कृत की सेवा में सबको तन मन आज लगाना है । २

– रचयिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

Sanskrita Ki Raksha Evam Prachara Ke Liye Pratijna
pdf was typeset on May 19, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*